मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डॉ० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9 | बृहस्पतिवार 10 मार्च 1983 | संख्या 11

सत्संग हुजूर परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज लक्ष्मी नारायण मन्दिर सिकन्दराबाद

19-2-75 प्रात:

गुरमत या सन्तमत की शिक्षा

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ तूने यह मकड़ी का जाला क्या बना लिया ? कुछ मेरे कर्म या भगवान् की इच्छा ! मैं हिन्दू हूँ, बचपन से परमात्मा, राम, कृष्ण इत्यादि की भक्ति करता था। लम्बा क़िस्सा क्या सुनाऊँ, सच्चाई की तलाश में दाता के चरणों में गया था। उन्होंने यह सन्तमत दिया, इनकी किताबें पढ़ीं, इन में सबका खण्डन था। राम, कृष्ण को भी काल का अवतार कह दिया,

वेदान्ती, सूफ़ी, जैनी, बौद्ध, इस्लाम और ईसाई सब कालमत में कह दिया। अब, मेरा एक दृश्य द्वारा दाता पर विश्वास था, दाता से तो मेरा व्रिश्वास टूट न सका और ये वाणियाँ भेद नहीं देती थीं। उस वक़्त मैंने प्रण किया था, इस रास्ते सच्चा होकर चलूंगा, जो कुछ मेरा अनुभव होगा, बता जाऊंगा, यह तो था मेरा कर्म।

दाता ने बड़ी दया की, इस भेद को बताने के लिए कि सन्तमत की असलीयत और हक़ीक़त क्या है, क्यों बड़ा है, मुझे यह काम दिया था और तीन ड्यूटियाँ लगाई थीं :—

(1) निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की मदद करना।

(2) संसार के जीवों को भवसागर से पार निकालने की कोशिश करना और

(3) जगत्कल्याण का का काम करना।

क्योंकि हम हिन्दू हैं, हमारे पर ऋण है—मातृ ऋण, पितृ ऋश, गुरु ऋण और राज्य ऋण हैं। ऋण कहते हैं कर्ज़ को। जो इस कर्ज़ को नहीं

उतारता है, हिन्दू फिलासफी के अनुसार वह मुज़रिम (अपराधी) है। मातृ ऋण और पितृ ऋण तो तुम जानते ही हो, जिस माँ-बाप ने तुमको पैदा किया है, पाला है यदि तुम बड़े होकर उनकी इज़्ज़त, उनका मान, उनका सम्मान नहीं करते, तुम मुजरिम (अपराधी) हो। भाई है, दोस्त है, जिसने तुम्हारे साथ मदद की है, तुम उसका एहसान नहीं मानते, तुम मुजरिम (अपराधी) हो। हकूमत है, तुम्हारी रक्षा करती है, तुम अगर उसका हुक्म नहीं मानते, तुम अपराधी हो। इसी तरह से गुरु ने, जिसने तुम्हें ज्ञान दिया है, यदि तुम उसका कर्ज़ा नहीं उतारते तुम मुजरिम हो। यह कारण है मेरे इस काम करने का।

मैं यहाँ आया, सोचता हू क्या मैं किसी की मदद कर सकता हूँ ? यह एक सवाल है ! मेरे पास लोग आते हैं, अपने-अपने दुःखड़े रोते हैं, तो क्या मुझको अपनी आत्मा से पूछने का हक़ नहीं है कि यह जो तेरे पास आते हैं, तू इनको कुछ दे सकता है ? इस सवाल के ज़बाब में मैं यह बताना

चाहता हूँ कि ऐ इन्सान ! तुमको या मुझको जो कुछ भी मिलता है, वह तुम्हारी अपनी वासना का फल मिलता है, यह मेरी समझ में आया है। मांगो और मिलेगा ! मांगने का तरीक़ा हम लोगों को नहीं आता :—

मालिक के दरबार में कमी, काहू वस्तु की नाहि ।
बन्दा मौज न पावई, चूक चाकरी माहि ॥

क़ुदरत का नियम है *Demand and Supply* । मांगने का तरीक़ा क्या है? शास्त्रों में लिखा है जो संकल्प व वासना हम जाग्रत अवस्था में, आँखें खोल के करते हैं उसका इस कलियुग में इतना असर नहीं होता जितना कि जो वासना हम आँखें बन्द करके, अपने दिमाग़ में रख के, करते हैं उसका असर होता है। क्यों? आप वायरलैस को जानते हैं, आप में से कोई पढ़े हुए इन्जीनीयर होंगे, जानते होंगे कि वायरलैस में दो *Coils* होते हैं, एक प्राईमरी (*Primary*) *Coil* होता है और दूसरा सैकण्डरी (*Secondary*) *Coil* होता है। यदि दस बोल्ट की बिजली प्राईमरी *Coil* से गुज़रती है तो जो सैकण्डरी

Coil है उसमें अगर यहाँ सौ चक्कर हैं वहाँ हज़ार चक्कर लगा दो तो जो वोल्टेज प्राईमरी से निकलेगी वह उसके साथ लगने से एक हज़ार *Voltage* बाहर जायेगी। यह जो हमारी त्रिकुटी का स्थान है, जो आदमी अपनी वृत्ति को यहाँ इकट्ठा करके किसी चीज़ की वासना करता है, उसमें उसको सफलता होती है। मैं *Scientific* (वैज्ञानिक) तरीक़े पर आप को बता रहा हूँ। हमारा ख़्याल, हमारी रूह है क्या ? *energy* तो है ! बाहर की *energy, gross matter* के *elemants* को इकट्ठा करके बनाई है और यह जो सूक्ष्म *elemant* हमारे अन्तर है, एक ही क़िस्म है। इस वास्ते अपने तजर्बे के आधार पर कहता हूँ कि गृहस्थियों व दुनियादारों को चाहिए कि जो कुछ वे मांगते व चाहते हैं वह अपनी खोपड़ी में अपने मन को इकट्ठा करके यहाँ मांगा करो और मिल जायेगा। जितनी ज़बर्दस्त लगन व चाह तुम कोई चीज़ की रखते हो वह हो जाती है ! इसका तजर्बा मुझे हुआ, मैं तो कहीं जाता नहीं, मुझे पता नहीं, लोग अपने अन्तर मेरा रूप बना लेते हैं, उनकी *Concentration* हो जाती है, तो जो कुछ वे मांगते

हैं उनका हो जाता है । समझते हो मूलचन्द ! क्या कहा मैंने ?

मेरे जिम्मे चूँकि ड्यूटी है, मेरे पास दुनिया आती है, वह कहते हैं, बाबा ! यह कर दो, मैंने तुमको बता दिया, बाबा न कुछ करता है न कर सकता है, तुम आप करते हो और कर सकते हो । क्योंकि जोव निबल है उसको अपने ऊपर विश्वास नहीं आ सकता इसलिए वह गुरु के रूप का सहारा लेता है । एक बात !

तुम गृहस्थी हो, मेरे पास कई दु:खी आते हैं, मैं उन्हें यही कहा करता हूँ ध्यान करो और मांगो, मिल जायेगा । मैं यह नहीं कहता तुम मेरा ही ध्यान करो, नहीं ! जिस जगह पर तुमको विश्वास है, जो तुम्हारा गुरु है, जो तुम्हारा इष्ट है, (मैं इन झगड़ों में नहीं पड़ना चाहता) मैंने तुमको गुर बता दिया, तुम उसी का ध्यान करो । चूँकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी, निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की मदद करने की इसलिए मैं यह साफ़ब्यानी कर चला । अब तुम सोचो कि जो कुछ तुम मांगते हो क्या कोई दे सकता है ? यह एक सवाल है । देखो ! तुम रात

को स्वप्न में चले जाते हो, तुम्हारे ख्याल में गुस्सा आता है, किसी को मुक्का मारते हो, तुम्हारा हाथ हिल जाता है। किसी को ठोकर मारते हो, पाँव हिल जाता है। स्वप्न में डर जाते हो तो तुम्हारी ज़बान बड़बड़ाती है। एक कल्पित औरत बना लेते हो, उसके साथ भोग करते हो, तुम्हारा वीर्य नष्ट हो जाता है। तो इससे साबित हुआ कि जो वासना तुमने *uncalled for* की थी, (स्वप्न के ख्यालात तुम्हारे क़ाबू में तो नहीं हैं नां !) अगर उन ख्यालों के असर से जो तुम दिमाग़ में सोचते हो तुम्हारा हाथ हिल जाता है, तुम्हारा वीर्य नष्ट हो जाता है, तुम्हारा पाँव, ज़बान हिल जाती है तो जो कुछ संकल्प और ख्याल या वासना तुम जाग्रत में रखोगे, उसको अपनी खोपड़ी में सोचते रहोगे, क्या उसका असर तुम्हारे जिस्म पर न होगा ? होगा कि नहीं होगा ? ज़रूर होगा। इसी वास्ते ऋषियों ने हमको यह तालीम दी है कि मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहने की कोशिश करो, अपने ख्याल अच्छे रखो। ऋषि लोग क्या करते थे ? साधक थे अपने अन्तर, किसी को शाप दे देते थे हो जाता था, किसी को वर दे

देते थे हो जाता था। यह क्यों होता था? क्योंकि वे अन्तर के साधक थे और जो कुछ इच्छा करते वह पूरी होती थी। नहीं समझ में आती आपको!

गुरु की ड्यूटी क्या है? दूसरे की बुद्धि को निश्चयात्मक बना दे, यह है गुरु की ड्यूटी। गुरु दया क्या करता है:—

जब दया गुरु की हुई, निश्चय की शक्ति मिल गई।
निबलता जाती रही, और बल की शक्ति मिल गई॥
आ गये सत्संग में, और संग सत्त का हो गया।
दुर्मति जाती रही, और सुमति की शक्ति मिल गई॥

यह है गुरु के सत्संग की महिमा। मेरी यह ड्यूटी है कि जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ वह इस तरह से ब्यान करूँ कि तुम्हारा दिमाग़ उसको क़बूल करे। अगर मेरी बात से तुम्हारे में शक़ रहता है, शंका रहती है, भ्रम रहता है, यक़ीन नहीं आता तो कोई फ़ायदा नहीं। मैंने अपने आप को सन्त सत्तगुरु कह कर इस संसार में प्रकट किया है और किताबों में भी लिखता हूँ। अपनी आत्मा से सोचता हूँ फ़कीर चन्द! तू अहंकारी हो गया? मैं अहंकारी नहीं हो गया। सत्तगुरु नाम है

सच्चे ज्ञान का, वह मैं सच्चा ज्ञान आप को मौजूदा ज़माने की *Scientific basis* के मुताबिक, *Logically*, ब्यान कर रहा हूँ। तो आपने क्या करना है ? पहले काफ़ी सत्संग करो कि *line of action* तुमने क्या करना है। *What do you want* ? आप समझते हो मेरा मतलब ? आप क्या चाहते है ! पहले इस बात को समझो कि आप अभ्यास करते हो, क्यों अभ्यास करते हो ? आखिर कोई *object* होना चाहिए ? जो आदमी बग़ैर किसी मक़सद के काम करता है उसका तो कोई फ़ायदा नहीं, सुनी-सुनाई बातें करने से क्या फ़ायदा। तो चूँकि मेरे ज़िम्मे यह ड्यूटी थी, मैं भी हर साल के साल आ जाता हूँ, खबर नहीं अगले साल आऊँ या न आऊँ, क्या पता है, उस के हाथ में है, मगर मैं अपना फर्ज़ पूरा किये देता हूँ. आप लोग आये हैं, आपको यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ भी तुम्हें चाहिए वह अपने अन्तर में यहाँ (त्रिकुटी के स्थान) पर *coils* हैं, यह *coils* हैं यहाँ ! यहाँ से *Thought waves,* (विचार तरंगें) बाहर में, वायरलैस में तो बिजली की *waves* जाती हैं नां !, तो यहाँ हमारी *Thought waves.* (विचार

तरंगें) जाती है, वह भी बिजली है। वह *waves* तुम्हारी आसमान पर जायेंगी जिस तरह वायरलैस की जाता हैं। तो जब आप की *waves* आसमान पर जायेंगी वह तो वह जिस चीज़ की तुम्हें ज़रूरत है वह *waves* वहाँ से *matter* लाकर किसी आदमी के द्वारा या किसी ख़्याल के द्वारा आकर के तुम्हारी मदद कर जायेंगी। कर के देखो ! मगर एक बात याद रख लेना ! मैं आम तौर पर आशीर्वाद कम देता हूँ, लोकाचारी कर देता हूँ दुनिया में, क्यों ? आपकी एक इच्छा या वासना है, आप कुछ चाहते हैं, आप मेरे पास आये, मैंने आपकी इच्छा को पूरा करने के लिए अपनी इच्छा की, जिसको आशीर्वाद कहते हैं। मैंने भी यह चाहा कि आपकी मनोकामनाएँ पूरी हो-जायें। ठीक है, अच्छा ! आपने उस ख़्वाहिश को लिया। यह फूल है, इसके साथ धागा बंधा हुआ है। आपकी *Force* (शक्ति) के साथ धीरे-धीरे ऊपर आ रहा है। मैंने आशीर्वाद दी, मेरी *Force* चली गई, यह जल्दी जायेगा। ऐसा होगा कि नहीं होगा ? अगर आपने अपनी वासना को *abruptly* (एकदम) *Change* कर दिया, समझ रहे हो मेरी बात को, मैंने क्या कहा

आपको, समझने वाली बात है ! मैं सत्संग करा रहा हूँ । आपकी इच्छा को पूरा करने के लिए दूसरे गुरु ने या किसी दुःखिये ने तुम्हारे लिए *well wishes* की तो यह काम जल्दी होगा परन्तु अगर आपने अपनी बासना को बदल दिया तो क्या होगा ? यह जो ऊपर जा रहा है यह एकदम नीचे गिरेगा । एक तो आपकी *force* टूटेगी, एक मेरी *force* टूटेगी, *you will Suffer more* । मेरे ख्याल में जो कुछ मैंने कहा है, आप समझ गये होंगे । इसलिए वासना करने से पहले सोच लो कि आपकी चाह सच्ची है ? इसी वास्ते सन्त काफ़ी परीक्षा लेने के बाद किसी को नाम देते थे, *whether he has a strong desire to achieve this*। वह देखते थे कि उसको ख्वाहिश है इस चीज़ को हासिल करने की या नहीं ! आजकल क्या है ? सुबह गाड़ी में गुरु महाराज के पास जाओ, मन्त्र ले आओ और वापिस आ जाओ । यह जो सेवा ली जाती थी, ऋषि लोग *test* करते थे या नहीं ! यूँही किसी को ज्ञान नहीं देते थे । वे देखते थे कि इसमें इस चीज़ के हासिल करने की कितनी कि *desire* (चाह) है । मेरी बात को आप समझ रहे हैं सब ?

इतिहास पढ़ो, बाप ले गया लड़कों को, इनको नाम-दान दे दो जी। इनको छोड़ जाओ भाई ! तो जिस वक़्त तक किसी की ज़बर्दस्त कोई ख़्वाहिश न देखो (आनन्द राव तुमको कर रहा हूँ) तब तक उसको आशीर्वाद मत दो। क्या कह रहा हूँ, कौन समझेगा मेरी बात को ! क्योंकि हमारी ख़्वाहिशें देखकर होती हैं, आपके पास मैंने घड़ी देखी, मेरे जी में आया मुझे घड़ी चाहिए। किसी की अच्छी चीज़ देखी हमारे जी में आ गया वह अच्छी चीज़ हासिल करने के लिए, यह *Superficial desire* (बनावटी चाह) होती है। एक *desire* होती है इन्सान के अपने अन्तर की *True Craving* (सच्ची लालसा)। समझ रहे हो मेरी बात को ! तो आपको मैं कहना चाहता हूँ कि जब तक किसी आदमी में यह न देख लो कि इसमें ज़बर्दस्त चाह है तब तक उसको आशीर्वाद मत दो। अगर तुम उसके लिए आशीर्वाद दोगे, कल को उसने अपनी चाह को बदल दिया तो उसको चाह के बदलने से ज़्यादा तकलीफ़ होगी। यहाँ रामचन्द बैठा हुआ है ? सुन रहे हो मेरी बात को, क्या कहा मैंने

आपको ? मुझे भक्ति व प्रेम की ज़रूरत थी, सारी ज़िन्दगी मैंने प्रेम ही किया। एक बार मैं खत लिखने बैठा, मुझे प्रेम दो, प्रेम दो, दस सफ़े भर दिये, दाता दयाल को लिख दिये। उन्होंने कहा तुमको भक्ति व प्रेम मिल जायेगा। तो जब तक कोई मांगता नहीं, मांगो और मिलेगा। तो हमारी असफलता जो होती है, उसका यह कारण होता है कि आज हम यह चाहते हैं, कल को वह चाहते हैं, वह पहला ख़्याल छोड़ के दूसरा ले लेते हैं। इसी वास्ते सन्तों के मार्ग में मन को शान्ति देने के लिए सन्तोष, सुख और शान्ति मांगी गई है। आप समझ गये मेरा मतलब कि नहीं!

तो मेरे ज़िम्मे चूँकि यह ड्यूटी थी कि निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की मदद करना, मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मेरा अनुभव है यही ठीक है, दावा नहीं करता, मैंने जिस बात को *Realize* किया है मैं वह कहता हूँ। मेरे अपने हालात अजब मैं देखता हूँ, अव्वल तो मैं वासना नहीं करता, यदि किसी समय कोई वासना मेरे अन्दर अपनी ज़ात के लिए उठती

है, मिनट नहीं लगता पूरी होने में, कोई न कोई वसीला मेरा बन जाता है। फ़कीरों की ज़िन्दगी और है, गृहस्थियों की ज़िन्दगी और है। तुम गृहस्थी हो, तुमको दुनिया चाहिए, सोच समझ के पहले, तब तुम वासना किया करो। मैंने आपको बात बता दी कि यह जो त्रिकुटी का मुक़ाम है, यह तुमको सुमिरन करने की विधि नहीं मालूम, यहाँ बैठ के वासना किया करो, इसी का नाम है सुमिरन। दाता फ़रमाया करते थे *eate to the purpose, walk to the purpose,* यह उनके लफ़्ज़ थे। जब अभ्यास करते हो, सोचो! तुम क्यों करना चाहते हो अभ्यास? क्या चाहते हो तुम? वासना रखो अपने अन्तर, उस वासना को लेकर अगर तुम अभ्यास करोगे, यदि तुम्हारी अभ्यास की वासना पूरी न हो तब तो तुम मुझे कहो। समझ गये मेरी बात को? मगर हमारा मन इतना चंचल है कि हम घड़ी में तो कुछ चाहते है, फिर कुछ चाहते हैं, फिर कुछ चाहते हैं, तो 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का', किसी तरफ़ का नहीं रहता। समझ गये मेरी बात

को मैंने जो कहा ! आपको मैं गुर बताये जा रहा हूँ अगली दफ़अ आऊँ या न आऊँ क्या पता ! मालिक के हाथ में बात है, मैं आप लोगों को *line of action* बताना चाहता हूँ। अब हर शख़्स की वासना एक हो नहीं सकती, आप समझते हो मेरा मतलब कि नहीं, क्योंकि प्रकृति भिन्न-भिन्न है, *Nature* भिन्न-भिन्न है। अब जो काम तुम किसी *object* व मक़सद को ले के करोगे, तुम सफल होगे। अगर तुम ऊट-पटाँग सोचते रहोगे तो तुम अभ्यास भी करते रहो, तुम्हारी ज़िन्दगी में चैन नहीं, *Peace* (शान्ति) नहीं मिलेगी तुमको, न मक़सद-ए-ज़िन्दगी पूरा होगा। जो कुछ भी करो वह किसी मक़सद के लिए करो। चूँकि मेरे ज़िम्मे मदद करने की ड्यूटी थी इस वास्ते मैं आपको तरीक़ा बताये देता हूँ।

दूसरी बात ! हम लोग सन्तान पैदा करते हैं, क्या हम औरत के पास जाते हैं, सन्तान के ख़्याल से जाते हैं ? सोचो ! नहीं न जाते ! तो *Uncalled for children* पैदा होते हैं। क्योंकि तुम्हारा *aim and object* कोई नहीं है, वह जो तुम्हारी औलाद है वह तुम्हारे *out of control* होगी, तुम्हारे कहे में नहीं लगेगी,

बेज़ब्त होगी। क्या कहा मैंने ! पिछली बार प्रेजिडेण्ट फखरुद्दीन अली अहमद साहिब ने मज़हबी इदारों (केन्द्र) वालों को लिखा था कि वे इन्सानियत की तालीम दें, इन्दिरा गान्धी ने कहा, *Nonvoilence* (अहिंसा) सिखायें। मैंने इसके ऊपर पाँच-सात सत्संग दिये जो रसाला दयाल को भेजे हैं, वो उर्दू में उनको छापेगा। अब तुम लोगों से भी कह रहा हूँ कि जिस *object* से सन्तान पैदा की गई है वही *object* तो हमारी औलाद पैदा करेगी ! सोचो मेरी बात को मैंने क्या कहा है ! आजकल देखो ! जहाँ छः मन कनक पैदा होती थी अब विज्ञान से 16-16, 20-20 मन पैदा होता है कि नहीं होती ? *Logical Science* ने कितनी तरक्की की है !. कहीं यह तालीम है कि अच्छी सन्तान पैदा करो, कोई करता है ? नहीं न करता ! तो फिर रोते क्यों हो भई ! जिन ख़्यालात, जिन भावों को लेके तुमने बच्चे पैदा किये हैं, वही तो तुम्हारे आगे आयेंगे, जो तुम मर्ज़ी चाहे करते रहो। मैं चाहता हूँ कि जो नौजवान शिक्षित जोड़े हैं, जो मेरे पास आते हैं, मैं उनको *bless* करता हूँ, मैं कहता हूँ अच्छी सन्तान पैदा करो।

गुरु-गुरु करने और गुरु की देह को ही जफ्फा मारने से तो गुरु के देश को नहीं जा सकते। मेरा अंग, जो गुरु है वह है ज्ञान। ज्ञान जब भी ज़ाहिर (प्रकट) होगा वह लफ़्ज़ों द्वारा ज़ाहिर (प्रकट) होगा। तो मेरा अंग मेरे *words* (शब्द) हैं, मेरी वाणी है, जो मेरी वाणी को सुनके अमल करेगा उसको फ़ायदा पहुँचेगा, मुझे जफ़्फी मारने से क्या फ़ायदा होगा भई! आप लोग जो सत्संग में आये, मैं चाहता हूँ कि आप लोगों को इतनी दौलत दे जाऊँ कि मेरे शरीर के बाद फिर आपको कुछ पूछने की कोई ज़रूरत न रहे। आप मेरे भाव को समझे कि नहीं! आपको अपनी ज़िन्दगी में *line of action* मिल जाये वरना आजकल तो *Guruism* दुनिया में एक रोज़ी कमाने का धन्धा बना हुआ है, आप समझते हो मेरा मतलब कि नहीं! हम लोग पाखण्ड करके, गेरुए वस्त्र पहन कर, गृहस्थियों को बेवकूफ़ बनाकर उनकी दौलतें लूटते रहते हैं, अर्थात् ठगइज्म है।

तो यह है तरीक़ा मांगने का यहाँ (त्रिकुटी के स्थान पर), इसी वास्ते सुमिरन, ध्यान दिया जाता

है, मगर यह सुमिरन, ध्यान गुरु द्वारा मिलना चाहिए :—

> गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
> गुरु बिन नाम हराम है, जाय पूछो वेद पुरान ॥

दुनिया नहीं जानती, इसका मतलब क्या है। गुरु नाम है समझ का, गुरु नाम है विवेक का और ज्ञान का, जो काम करते हो सोच, समझ और विवेक के साथ करो। मन की लहर बड़ी ज़बर्दस्त है, उसको काबू में करना आसान काम नहीं; तो जब गुरु से जो समझ मिली हुई है उस समझ के साथ तुम चलोगे, तुम्हारा कल्याण होगा।

तुम माताएँ हो, तुम्हारे ख़्याल में ताक़त है, मेरे में भी, तुम्हारे में भी। अब तुम सोचो, एक औरत है या तुम हो, तुम नाम जपते हो यहाँ (त्रिकुटी में) रोज़ आधा-आधा घण्टा ध्यान करते हो। इससे क्या हो जायेगा ? तुम्हारे ख़्याल की *waves* (जैसे मैंने वायरलैस का उदाहरण दिया) बढ़ेगी कि न बढ़ेगी ? मगर तुम अपने दिलों में नफ़रत करती हो, तुम्हारा पति के साथ झगड़ा, देवरानी के साथ झगड़ा,

सास के साथ झगड़ा, दूसरों का तुम बुरा चाहती रहती हो, जो बुरा चाहने का या घृणा का ख़्याल तुम्हारे *Subconscieus mind* में है, जब तुम अभ्यास करोगे वह तुम्हारे लिए और जिनके लिए तुम बुरा चाहते हो, दोनों के लिए हानिकारक सिद्ध होगा। आप समझ रहे हो मेरी बात को, मैंने क्या कहा ! मुझे *Lecture* देना नहीं आता, मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ, *third middle* हूँ परन्तु अपने शब्दों में आपको किसी चीज़ के ज़हननशीन कराने (हृदय में बिठाने) के लिए कोशिश करता हूँ। एक औरत है या तुम हो, तुम अभ्यास करते हो, त्रिकुटी में ध्यान करते हो, मैंने आपको बता दिया कि यहाँ ध्यान करने से वह चीज़ पूरी होगी। तुम में नफ़रत है, झगड़ा है तुम्हारा दूसरों से, दूसरों से यह है, वह है, तो तुम्हारी जो वासना है वह *Develcp* हो जायेगी, वह उनका भी नुक़सान करेगी तुम्हारा भी नुक़सान करेगी। इस वास्ते कहते हैं कि गुरु बिन माला फेरना हराम है। पहले सत्संग, करके *line of action* दरयाफ़्त करो कि तुमने करना क्या है ? वरना यह अभ्यास खा जायेगा तुमको !

यह जो नाम तुम सुमिरन करते हो, तुम समझते हो तुम नाम सुमिरन से तर जाओगे, तुम डूब जाओगे !! क्योंकि वह नाम तुमने गुरु के बिना लिया है !!! यह नहीं कि फ़कीर चन्द को, तुमने गुरु मान लिया, तुम सुमिरन करते हो, तो तुम गुरु वाले बन गये, तुम भूले हुए हो। हम गुरुओं ने तुम लोगों को नाम नहीं दिया ! हम लोगों ने चेले ज़्यादा बनाकर केवल अपना नाम और अपना मान मशहूर किया है कि मेरी गद्दी के इतने चेले, मेरे इतने अनुयायी हैं। यह सब ग़लत है। मैंने नाम नहीं दिया, गंजे को नाख़ून दे दो वह उखेड़ेगा। इस वास्ते सबसे बड़ी महिमा सत्संग की है। समझते हो रामचन्द ! आँखें खोलो !! इस वास्ते औरतों को, जो सत्संग करती हैं, उनको चाहिए कि अपने मन से सबका भला चाहा करो, अपने परिवार का भला चाहा करो, किसी से द्वेष नहीं रखना चाहिए, किसी से नफ़रत और किसी से बुग्ज़ (डाह) नहीं रखना चाहिए वरना वह जो तुम नाम जपोगे, वह तो *Law* (क़ानून) है, जितनी ख़्वाहिश से जो *Subcorscious mind* में है वह

तुमको मिल जायेगा! इसलिए नाम लेने से पहले :—

कुछ एक दिन कीजे सत्संगा।

पहले सत्संग करो, बात को समझो, *line of action* लो। अब यह गुरु की ड्यूटी है कि जिस शख़्स को वह *deal* करता है, उसकी प्रकृति को पहले *study* (अध्ययन) करे कि उसकी पैदाइश किस खानदान में हुई है, उसके जज़बात क्या हैं। तो वह उसकी प्रकृति को देखकर उसको तालीम दे और उसको बढ़ाये। समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा है आपको? नाम देना कोई आसान काम नहीं है। मैं आपको अपनी मिसाल बताता हूँ। मेरे छोटे भाई रायसाहिब सुरेन्द्र नाथ थे उनका नाम पहले ढेरूमल था, दाता ने बदल दिया। यह भी मेरी तरह नाम लेना चाहता था, दाता ने नाम दे दिया, कहा भई! जपना नहीं, तुमने नाम जपना नहीं! क्या करना? तेरे वास्ते *life means work & work means life.* समझ गये मेरा मतलब? दूसरे की *nature* को *study* करो, उसको *Nature* के मुताबिक़ उसको हिदायत करो। बाज़ वक़्त मेरे पास ऐसे *case* आते हैं, खानदानी, उनके भाईयों के साथ झगड़े होते हैं। लेने देने के

व्यापार में होते हैं, अगर सब को ही यही कहो कि भक्त बन जाओ, भक्त बन जाओ, दुनिया उनको खा जायेगी ! क्या कह रहा हूँ मैं, सेठ साहिब ! परमार्थ एक और चीज़ है, स्वार्थ एक और चीज़ है, दुनिया में रहने के लिए हमें यहाँ बहुत कुछ करना पड़ता है। इस वास्ते यह गुरु का काम है कि *Individual* हिदायत करे, *Individual* जिस तरह से *Health department* है और *Hospital* अलग है। *Health department* तो वह बात कहता है जिससे बीमारियाँ आयें नां और *Hospital* जो है, बीमारी हो तो *injection* लगाता है, काटता है। इसलिए गुरुमत है, किसी महरम-ए-राज (भेदी) से अपनो तकलीफ़ात ब्यान करो, अपने आपको उसके सपुर्द करो, अगर वह *copable* (योग्य) है किसी को *deal* करने के, तब उसको *case* हाथ में लेना चाहिए। जिस तरह डाक्टर है नां ! अगर उसने उसको *diagnose* कर लिया, वह समझता है कि मैं *cure* (इलाज) कर सकता हूँ तब उसको उसका इलाज शुरू करना चाहिए, अगर वह *capable* (योग्य) नहीं, तो क्या

करेगा ! ऐसे ही गुरु जो है वह हालात सुन के अगर वह समझता है कि *He can change his life* तब वह उसको नाम दे और उसका बाज़ू पकड़े वरना नुक़सान है, इसी वास्ते नाम अधिकारी को दिया जाता है, दुनिया इसका अर्थ नहीं समझती। अधिकारी है कौन ? उसकी प्रकृति को *change* करना पड़ता है। मेरे पास वहाँ होशियारपुर में दुनिया आती है, मैं कोई नाम देता हूँ ! हर शख्स की तकलीफ़ात को सुनता हूँ, उसको राय दे देता हूँ, उसका काम बन जाता है, वह *credit* मुझे देता है कि बाबा ने कर दिया. बाबा कुछ करता न कराता ! मैं उसके *circumstances* (हालात) को देखकर कहीं पड़ता पड़ जाता है (आप समझते हो मेरे भाव को कि नहीं) तो यह एक क़ानून नहीं है। मेरे जिम्मे चूँकि ड्यूटी थी, मैं यहाँ आया, आप लोग आ गये, गुरु करता क्या है ? क्या देता है ? गुरु की क्या ड्यूटी है, दाता का शब्द है :—

धन्य-धन्य गुरु दयाला, धन्य उदार सो सहज कृपाला।
तुम्हरी दया कटे यम फांसी, तुम्हरी कृपा अविद्या नासी ।।

यह ! यम है तुम्हारा मन। यह ग़लत ख़्यालात उठाता है, विचार ग़लत उठाता है, *line of action* इसको नहीं आता तो गुरु दया करके उसको सत्संग करा कर यह बताता है। मेरे में यह नुक्स है कि मैं बात को बिलकुल साफ़ कर देता हूँ क्योंकि बाज़ी जगह अगर यह साफ़ बात न की जाये, सिर्फ़ हुक्म दे दिया जाये उसका असर, दूसरा अगर मान जाये तो जल्दी होता है, आप समझ गये मेरा मतलब कि नहीं ! अगर बात को ज़्यादा साफ़ कर दिया जाये *blind faith* नहीं रहता। *blind faith* वाले (अन्ध-विश्वासी) जो आदमी हैं अपना काम जल्दी कर जाते हैं। मैं आप को उदाहरण दिया करता हूँ कि मैं होशियारपुर में था, एक आदमी आया, बीमार था बेचारा ! मेरे गले पड़ गया। बाबा ! मैं दुःखी हूँ, दुःखी हूँ, दुःखी हूँ ! मुझे कुछ करो। मेरे मुँह से निकल गया कि काहे को चिन्ता करता है, तू सात दिन में मर जायेगा। यह मैंने उसको कह दिया। मैंने तो अपना पीछा छुड़ाया, मैंने तो यह समझा सात दिन हैं। सोम, मंगल, बुध, बीर, शुक्र, शनि, और

रविवार, एक दिन मर जायेगा। अब उसने मेरे *words* (शब्दों) को यह यक़ीन कर लिया कि मैं सात दिन में मर जाऊंगा। वह घर गया, बच्चों को कहा, बाबे ने कह दिया मैं सात दिन में मर जाऊंगा, छठे दिन मर गया। इसका नाम है *blind faith* (अन्धविश्वास) इस वास्ते आनन्द राव ! कभी किसी सत्संगी को यह नहीं कहना कि तेरा अकाज होगा, तेरा नुक़सान होगा ! नहीं समझ में आती है मेरी बात, मैंने क्या कहा है आपको ! ज्योतिषी को, गुरु को और डाक्टर को यह हुक्म नहीं है कि वह कह दे कि तेरा यह नुक़सान हो जायेगा, तू मर जायेगा, क्योंकि बाज़े वक़्त इन्सान ख़्याल ले लेता है। मैं इन्दौर गया, एक आदमी मेरे पास आया, दमे की बीमारी थी, बाबा, दुःखी हूँ ! मैंने कहा काहे को रोता है, पिछले कर्म काटने हैं, छः महीने और बर्दाश्त कर। बात आई, चली गई। अब वह दिन गिनने लगा, आज पाँच महीने रह गये, आज इतने दिन गुज़र गये, इतने दिन रह गये, जब छठे महीने का आखिरी दिन आया उस दिन मर

गया । अब मैं पछताता हूँ कि मैंने क्यों कहा । हमेशा आशावादी *Views* लो, रामचन्द ! सुनता है कि नहीं ! हमेशा पुरउम्मीद रहो । किसी को, रिश्तेदार को या अपने बच्चों को कभी मत कहो कि तू नालायक़ है । देखो ! मैं आपको बता रहा हूँ, तुम्हारे बच्चे हैं, इनको मत कहो कि तू नालायक़ है, तू ख़राब है । वह जो तुम्हारा ख़याल दिया हुआ है वह उसके दिमाग़ पर बैठ जायेगा, उसको नुकसान पहुँचा देगा ! ज़रूर पहुँचायेगा, बच नहीं सकते तुम !! हमारे घरों में पति पत्नी को बुरा-भला कहते रहते हैं, औरतें पतियों को बुरा-भला कहती हैं, इसका नतीज़ा हमारे घर में अशान्ति आ जाती है, इस वास्ते मैंने तालीम को बदल दिया कि घर में प्रेम रखो । जिस घर में पती पत्नी प्रेम से रहते हैं उनको कभी कोई कष्ट नहीं होना चाहिए ! मैं नहीं मानता !! कई औरतें होती हैं, मैं तुमको तुम्हारी अमली ज़िन्दगी (*practical life*) तुम्हारी बताता हूँ, ये कुढ़ती रहती हैं । देवर ने कोई बात कही, किसी ने कुछ कही, वह खोपड़ी में रखती हैं और उसके ऊपर सोचती रहती हैं, उनको

सज़ा मिलेगी। मेरी औरत थी, उनमें, रायसाहिब ने कुछ बात कही, भूलती नहीं थी, कहती कुछ नहीं मगर दिल में ज़रूर रखती थी। मैं जानता था कि इस क़िस्म की बातों का सेहत पर असर पड़ता है, तो मैं यही कहा करता था, भाग्यवती! तुम्हें तकलीफ़ होगी, छः साल चारपाई पर पड़ी रही।

तुमको बताये देता हूँ कि यह सत्संग है लेक्चरबाज़ी नहीं! मैं चाहता हूँ जो ड्यूटी मेरी, मेरे दाता दयाल ने मुझ पर लगाई, मैं उसको सच्चाई से पूरा कर जाऊँ :—

मेर तेर की जेवड़ी बट बाँधा संसार।

हमारे में मेर-तेर है। तो घरों में बेटियो! शान्ति रखा करो। अगर तुम्हारे घर में कलह है, उसका नतीजा ख़राब होगा। प्रेम से रहो। बच्चों को हर वक़्त फिटकारा मत करो, मारा मत करो, मगर इनका क्या क़सूर!, जिस भाव से तुमने पैदा किये हुए हैं यही तो बच्चे होंगे!! मैं सच्ची बात कहता हूँ तुमको बुरा लगे या अच्छा लगे। राम नाम जपने से, मन्दिर में कीर्तन करने से, सिर मारने

से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा ! तुम्हारा कल्याण अपने मन पर काबू करने से होगा !! बात साफ़ कहता हूँ कोई लगाव-लपेट नहीं, मेरे साथ बीती हुई है, बीती हुई। मेरी एक रिश्तेदार औरत थी, साली, उसकी सास से नहीं बनती थी। मैं जब कभी घर जाता उसको कहा करता बेटी ! तू दुःखी होगी परन्तु सुनता कौन था। परिणाम यह हुआ कि डाका पड़ा, डाकू सब कुछ ले गये, पति दमे की बीमारी से रुड़क-२ कर मर गया, औलाद नालायक़ निकली, आप टी.बी. से मर गई। इसी तरह *Politicial Parties* (राजनीतिक पार्टियों) को देखिये, न कांग्रेस, न इन्दिरा गांधी, न कोई और मुल्क में शान्ति नहीं ला सकता। क्यों ? हम लोग अपने अन्तर बैठ के सोचते रहते हैं, *Plan* बनाते हैं, कांग्रेस *Plan* बनाती है, फलाँ पार्टी को इस तरह से नुक़सान पहुँचाया जाये, दूसरी पार्टी *Plan* बनाती है, इन्दिरा गांधी को ऐसे नुक़सान पहुँचाया जाये। हमारे घरों में एक दूसरा, दूसरे को चाहता है कि ऐसे खेंचा जाये, यह सब जितनी ख़्याल की दुनिया है यह मानसिक जगत् है।

ऐसे ख़्याल रखने वाला अगर यह सोचे कि मुझे शान्ति मिलेगी, यह बिलकुल झूठ है।

अगर कुछ बन सकता है, दुनिया को अगर कोई अच्छा बना सकता है तो ऐ माताओ ! तुम हो, बस ! एक बात तुमको बताये देता हूँ। जिस ख़्याल से, जिस नीयत से हम लोग औलाद पैदा करते हैं वही कुछ हमको मिलता है। इस वक़्त इस तालीम की ज़रूरत है कि बच्चे अच्छे पैदा करो, उनको अच्छे संस्कार दो। समझ गये मेरी बात को !, मैं तुम गृहस्थियों को कुछ कहना चाहता हूँ, राम नाम या अगर जो मैं मुक्ति पद का ज़िकर करूंगा, चौथे पद का ज़िकर करूंगा तुम क्या समझोगे, तुम तो गृहस्थी हो, तुम को मैं गुर बताये देता हूँ घरों में शान्ति रखो, बच्चों को कभी बुरा-भला मत कहो, उनको *encourage* करते रहो। यह तालीम दाता दयाल ने दी, दी या कि नहीं ! वह कभी किसी को बुरा नहीं कहते थे। तुम किसी को बुरा-भला कहते रहो, जबान से कहने का इतना असर नहीं, जितना कि जब तुम अपने अन्तर में बैठ कर सोचते हो,

इसलिए जब तुम साधन में बैठते हो उस वक़्त अच्छे ख़्याल लेके अभ्यास किया करो । तो गुरु ने क्या दया की :—

धन्य धन्य गुरु, धन्य दयाला ।
धन्य उदार सो सहज कृपाला ।।

उदार किसे कहते हैं ? उदार वह होता है जो जल्दी दया करता है । आप फ़र्ज़ करो अमीर हो, कोई दु:खी आया दस रुपये दे दिये, इस तरह से जो किसी का भला करने वाला है ऐसे आदमी को बोलते हैं उदारचित्त । मैं उदारचित्त हूँ, वह छुपा हुआ भेद, वह *Secret*, जो गुरुओं ने आज दिन तक अपनी छाती में रखा और अपना मान लिया, अपनी इज्ज़त ली, सभी लेते हैं नां ! वह मैंने स्पष्ट रूप में प्रकट कर दिया। मैं किसी को कुछ देता हूँ ? कुछ नहीं देता ! लोग मेरी बात को सुनकर ले जाते हैं, उनको फ़ायदा पहुँच जाता है । आपके पिता जी थे नां ! मैंने क्या दिया ? उनके ख़्याल को बदला, और तो कुछ नहीं किया ! संकल्प कराया, पानी पी गया । उनके ख़्याल को बदला नां ! वह अगर बीस साल

फिर ज़िन्दा रहे और ख़ुश रहे तो मैंने क्या किया ! उनका ख़्याल बदल गया, तो हमने दूसरे का ख़्याल ही बदलना है । मैं अगर सेठ साहिब ! पर्दा रखता, जैसे मेरे चमत्कार हुए हैं, मैं दुनिया का ख़ून पी जाता, लूट के ले जाता ।

ख़्याल में बड़ी ताक़त है । एक मास्टर मोहन-लाल है वहाँ होशियारपुर में, मैं आ रहा था शिवरात्रि पर, तो उसका लड़का और वह मुझे मिले कि जी ! हमारे पोते के नाक में कील चली गई, कील से खेल रहा था, यहाँ नाक में चली गई, एक्सरे लिया वहाँ कील नज़र आती है, मेरे पास घबराये हुए आये । मैं जा रहा था गाड़ी पर, मैंने कहा भई ! एक बात है, मेरा इल्म कहता है कि लड़के को तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए । आप यहाँ के सिविल सर्जन को बोलो कि चुम्बक (मैगेनेट) लेकर के उसको निकाल दे । इतनी बात मैंने कह दी, लड़के को कोई तकलीफ़ नहीं होगी, तुम फ़िक्र मत करो । मैं चला गया, चार दिन के बाद जब वापिस आया, तो मालूम हुआ कि होशियारपुर में अस्पताल में

उसका ऑपरेशन करने लगे, वे कहने लगे भई ! हम तो ऑपरेशन करने से घबराते हैं, कील शायद आगे चली गई, नज़र नहीं आती, तो आप अमृतसर ले जाओ । वह अमृतसर गये, अमृतसर में उसको *Table* पर लिटाया, एक्सरे लो, कील था ही नहीं । मैं जब वापिस आया तो मेरा नाम वहाँ मशहूर है, "बाबा किल खाने वाला", आप समझते हो न ! मैंने कहा, मैंने कुछ नहीं किया, *faith* है । कभी भी किसी आदमी को मत कहो तुम बुरे हो, तुम ख़राब हो, तुम बदमाश हो और उनको अच्छे ख़्यालात दो । यही दाता दयाल की तालीम है, इनको पूछ लो, यही है ना ! कभी किसी को बुरा कहा उन्होंने ?

मैं, आज मैं आया, आप को सत्संग की केवल क,ख,ग पढ़ा रहा हूं, *Just to begin with* कि कैसे तुमने ज़िन्दगी गुज़ारनी है, *How to live in this world* ? अपने संकल्प पर काबू रखो, ख़्याल की दुनिया है, यह एक !

दूसरी बात सुन लो । मेरे पास नौजवान तबके (वर्ग) के आदमी आते हैं, ज़्यादातर अशान्त होते हैं ।

अशान्ति के मूल कारण तीन हैं। मेरे ज़िम्मे एक ड्यूटी है।

तू तो आया नर देही में, धर फ़कीर का भेसा,
दु:खी ज़ीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा ।।
तीन ताप से जीव दु:खी है, निबल अबल अज्ञानी,
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।।

यह मेरे ज़िम्मे ड्यूटी है। अब निबलता क्या है? अबलता क्या है? अज्ञानता क्या है? जिस्मानी कमज़ोरी का नाम निबलता है। तुम सोचो यह निबलता आती क्यों है? कुछ तो हमारे मां बाप से हमको संस्कार मिलते हैं। बाप को आतशिक है, सोजाक है, जरियान है, वह अगर औलाद पैदा करेगा *He is a Criminal*. मैं क्या कह रहा हूँ! बच्चे *inheritance* (विरासत) में बीमारियाँ लेते हैं, लेते हैं कि नहीं! कुछ तो उनको निर्बलता का यह कारण है और कुछ बच्चे पेट में होते हैं, स्त्री पुरुष फिर भी कामातुर होते रहते हैं, तो जो बच्चा पैदा होगा वह गर्भ में रहता हुआ काम के, क्रोध के, लोभ के, मोह के संस्कार जैसे होंगे, मां के होंगे, आयेंगे कि नहीं आयेंगे?

Inheritance (विरासत) में लेगा कि नहीं लेगा ? तो वक़्त से पहले गुमराह हो जायेगा, *Passionate* हो जायेगा, ख़राब काम करने लग जायेगा ।

आनन्द राव ! हज़ार चेले बनाने से अगर दस-बीस आदमियों की ज़िन्दगियाँ बन जायें तो वह हजारहा दर्जे बेहतर है । जिस तरह अर्जुन चक्रव्यूह बेधने का जिक्र करता था तो अभिमन्यु अपनी मां के पेट में था अभिमन्यु की कथा आपने सुनी हुई होगी, उसका असर उस बच्चे पर पड़ा और उसने सोलह वर्ष की आयु में चक्रव्यूह को बेधा । तो जब बच्चे तुम्हारे या हमारे पेट में होते हैं, हम इन्सान मूर्ख बनके औरत से भोग करते रहते हैं, तो जो बच्चे मां के पेट में होंगे वे कामी न बनेंगे तो क्या बनेंगे ! यह तो *Law of Nature* है इसको कौन रोक सकता है, लड़कियाँ हों या लड़के हों वे अपना चालचलन ख़राब कर लेंगे, तुमने जो किया है उसका भुगतान भुगतो !

तो कुछ तो संस्कार यह लेते हैं और कुछ हमारी सोसाइटी गन्दी हो जाती है । तो फिर क्या हो ?

कि आदमी अपनी ताक़त को जहाँ तक हो सके क़ायम रखे। तुम नौजवान बच्चे हो, तुमको कहना चाहता हूँ, मैं यह नहीं कहता कि तुम राधास्वामी लेके जपा करो, तुमको कहता हूँ, अपने *character* (चरित्र) का ख्याल रखो। समझते हो ना! ऐसे आदमी को या तो गुरु, महात्मा लूटेंगे या डाक्टर लूटेंगे। मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य यही दो चोज़ें, *Important* (जरूरी) हैं, हमारे शास्त्र यही तो कहते हैं कोई और तो नहीं कहते हैं! एक आदमी तीस-पैंतीस साल तक शादी नहीं कराता, रोज गिरता रहता है, क्या फ़ायदा! यह अभ्यास मैं जिनको प्रकाश इत्यादि नहीं खुलते हैं, तड़पते व तरसते रहते हैं ये कौन हैं? ये वे आदमी हैं जिनके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरे हुए होते हैं। मेरे साथ एक घटना गुज़री। एक केप्टन था *retired*, वह बाबा सावन सिंह जी के पास नाम लेने के लिए गया। उन्होंने नाम दे दिया। दस वर्ष उनकी ड्राईवरी की। जब उसको कुछ न मिला उसने बाबा सावन सिंह जी पर अदालत में दावा कर दिया कि इन्होंने मुझे

कहा था मैं ख़ुदा मिला दूंगा, रोशनी करा दूंगा, शब्द मिला दूंगा, दस साल मैंने इनकी ड्राईवरी की चालीस हज़ार का दावा कर दिया। ख़ैर, सत्संगियों ने बीच पड़ के चालीस हज़ार नबेड़ा। वह केप्टन मेरे पास होशियारपुर मेरे मकान पर आया। उसने बड़े गौरव से कहा कि मैंने ऐसा किया। मैंने उसको देखा। मैंने कहा एक बात कहूँ ? तेरी शादी हुई हुई है ? नहीं। मैंने कहा तुमको यह प्रकाश और शब्द नहीं खुल सकता। कहने लगा, क्यों ? मैंने कहा तुम अपने हाथ से अपना ब्रह्मचर्य नहीं खोते, सच्च बोलो ! और अब तक भी खोते हो !! कहने लगा खोता हूँ। मैंने कहा असली चीज़ तो तुम्हारे अन्दर, तुम्हारा वीर्य है, तुम उसको नष्ट करते रहते हो, कैसे तुम उम्मीद कर सकते हो कि तुमको ये चीज़ें मिलें। अभ्यासियो ! नौजवानो ! मैं तुमको सच्चाई ब्यान कर रहा हूँ।

एक शख़्स बनारस से होशियारपुर मेरे पास आया, कहने लगा मुझे ईश्वर के दर्शन करा दो, ईश्वर क्या है ? मैंने कहा ईश्वर क्या जिसमें ऐश्वर्य है,

ईश्वर दुनिया बनाता है, तुम्हारे अन्दर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा वीर्य है, जिसमें यह ताक़त है कि बच्चे पैदा कर देता है। दूसरा ईश्वर, तुम्हारा संकल्प है, वासना है, जैसी तुम वासना करोगे वैसी तुम्हारी दुनिया बन जायेगी। तीसरा ईश्वर का रूप प्रकाश है, रोशनी है, ज्योतिः स्वरूप है, तुम ईश्वर बाहर कहाँ ढूँढ़ते हो! तुम बेशक राम, राम न जपो अगर अपने मन पर काबू रखो, तुम ईश्वर के पुजारी हो, तुम बेशक ईश्वर का नाम जपो या न जपो। जो अपने वीर्य को बेफ़ायदा नष्ट करता है वह ईश्वर-द्रोही है। मैं यह भाषण दे कर अपने फ़र्ज़ को पूरा कर जाना चाहता हूँ जो दाता ने मुझ को कहा :—

तू तो आया नर देही में, धर फ़क़ीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगा कर, ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल, अबल, अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मैं जो बोल रहा हूँ यही तो मेरा नामदान है, और नामदान क्या है! जो मैं मुँह से वाणी कहता हूँ मेरा यही नामदान है। तो इसलिए ऐ

नौजवान बच्चो ! तुम में जो बैठे हुए हो, अपने कैरैक्टर को बनाओ, नौजवान लड़कियाँ हैं अपने कैरैक्टर को बनाओ, समझ गये मेरी बात को ! और इतना खाओ जितना तुम हज़म कर सकते हो। हम स्वाद के ज़ेर-ए-असर (वश में) ऊटपटाँग खा जाते हैं। यह मेरे साथ वाले भी वहाँ गये थे मक्की का क्या खाया, खाया कि नहीं खाया ? फिर दस्त लग गये। समझ रहे हो मेरी बात को ! मैं क्या कह रहा हूँ। खाओ जिन्दा रहने के लिए ! स्वाद के लिए न खाओ। यह है निबलता का एक मूल कारण।

सब से पहले सेहत का ख़्याल रखो। ख़ुश रहने की कोशिश करो, ख़्याल की ताक़त है। मैं देखो 88 साल का हूँ, बोलता हूँ, कोई मालूम करता है मैं बूढ़ा हूँ ? नहीं ना करता ? अपनी ज़बान को काबू में रखो, खुराक अपनी ठीक रखो, ज़्यादा खाओगे, बीमार हो जाओगे, सेहत का ख़्याल रखो। तो निबलता का क्या कारण है मैंने आप को बता दिया कि अपनी सेहत का ख़्याल रखो, अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को ठीक रखो, तुम्हारी निबलता

दूर हो जायेगी। यदि तुम यह उम्मीद करो कि मैंने फूक मार के तुम्हारी निबलता दूर करनी है, मैं तो कर नहीं सकता, शायद नन्दू भाई या कोई और गुरु कर सकता हो तो मुझे पता नहीं।

अबलता—तुम्हारा मन कमज़ोर है, वहमी है, भरमी है। यह वहमी भी आदमी पता है कौन है? तुम वैद्यक को पढ़ो, जिनके ब्रह्मचर्य ज़्यादा गिरे होते हैं वे वहमी होते हैं, ज़्यादा सवाल वह उठाते हैं, रामचन्द! आँखें खोलो! मैं क्या कह रहा हूं! समझ गये मेरा मतलब कि नहीं! हाय-हाय कौन करता है? माताओ हो, तुम्हारे बच्चे पैदा हुए हुए हैं, जिस बच्चे की सेहत अच्छी है, आप देखो! हमेशा हँसता रहता है और जो कमज़ोर है, टैं, टैं, टैं, मां भी दुःखी, बाप भी दुःखी, रिश्तेदार भी दुःखी इस वास्ते सबसे पहले अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को ठीक करो।

मन की अबलता में क्या है? इन्सान कमज़ोर है इसको सहारा दो, विश्वास दो, श्रद्धा दो, आशावादी बनो, हमेशा यक़ीन रखो कि भगवान्

जो करेगा अच्छा करेगा, मालिक जो करता है अच्छा करता है ! यह जो तुम्हारा *faith* है, मैं नहीं कहता तुम मुझ पर *faith* रखो, जहाँ तुम्हारा विश्वास बढ़ता है वहाँ *faith* रखो, राम पर रखो, कृष्ण पर रखो, एक पर रखो, यह बताये देता हूँ, अगर गुरुपरायण हो, हाँ ! "गुरु तारेंगे।" गुरु मेरा है, वह मेरा है ! मैं उसका हूँ !! तुम देखो ! गुरु नानक-देव साहिब की *History* पढ़ो, उनको विश्वास था उस मालिक का। जब सौदा तोलने लगे, एक, दो, तीन, जब 13 (तेरह) पर आये तो ख़्याल आ गया मैं तेरा, सौदा देते गये, मैं तेरा, मैं तेरा, मैं तेरा, मैं तेरा कहते गये कि नहीं कहते गये ! उनका विश्वास था नां कि मैं उसका हूँ। मोदीखाने वालों ने शिकायत की कि लुटा के खा गया, सारा हिसाब चैक हुआ कोई ग़लती नहीं निकली। तो उनकी उस ग़लती को किसने छुपाया ? "मैं तेरा"। तुम भी विश्वास रखो वह मालिक तुम्हारा है और तुम उसके हो ! जो करीहै सो भला !! अगर यह विश्वास बैठ जाये तुम्हारी अबलता सब खत्म हो गई, मैंने गुरु नानक साहिब की मिसाल दे

दी। मीराबाई को विश्वास था कि ठाकुरों का प्रसाद अमृत होता है, ज़हर दिया गया, उसको बताया भी गया, क्योंकि उसका विश्वास था कुछ नहीं हुआ। इस वास्ते विश्वास रखो; मालिक, सत्तगुरु तुम्हारे लिए जो कुछ करेगा, अच्छा करेगा! अगर यह विश्वास तुम्हारा बैठ जाये, कि वह मेरा है, मैं उसका हूँ तो बेड़ा पार है, समझते हो रामचन्द!

अब तुम कहोगे हम किस पर विश्वास करें, यह एक सवाल पैदा होता है। अब ज़माना बदल गया, अक्ल इन्सान की इतनी तेज़ हो गई है कि वह सवालो-ज़वाब करते हैं। किस पर तुमने विश्वास करना है, इसका ज़वाब सन्तमत देता है। सन्तमत है किनके लिए? सिर्फ़ ऐहले दिमाग़ वालों के लिए, जो *why and how* का सवाल करते हैं उनके लिए है यह सन्तमत, आम दुनिया के लिए सन्तमत नहीं है। आम दुनिया के लिए तुम्हारा अपना विश्वास है जहाँ मर्ज़ी है रखो। जिनके दिमाग है, यह ख्याल पैदा हो जाता है कि हम किस को पूजें, ईश्वर क्या है? परमेश्वर क्या है? ब्रह्म क्या है?

जिनके दिमाग़ में यह सवाल पैदा हो जाता है, उनके लिए यह सन्तमत है। आम दुनिया के लिए यह चीज़ नहीं है, *why and how* का *Question* जो करते हैं उनके लिए है, वह मैंने कल व परसों दो-चार सत्संग देने हैं उनमें आपको ब्यान कर जाऊंगा।

एक घण्टा बोला हूँ, एक घण्टे में मैंने बहुत कुछ आपको कह दिया, कोई कसर मैंने छोड़ी नहीं, अब अमल करना यह तुम्हारा काम है। वो अमल क्या करना है ? पहले यह यक़ीन करो कि परमात्मा या गुरु बाहर नहीं है यह तुम्हारे अन्तर रहता है, बस एक बात मैं बताये देता हूँ। जो गुरु को यह समझते हैं, होशियारपुर रहता है मदद उनकी भी होगी मगर वक़्त लगेगा। एक सरदार लाल सिंह है, वह पहले हमारा सैक्रेटरी था, वह कहीं गया। वहाँ जो गया तो किसी ने उसको कह दिया कि यहाँ मत सो, यहाँ रात को भूत आता है। उसने कहा मैं राधा-स्वामीया हूँ, मुझे कुछ नहीं होता। वह रात को सो गया। रात को 12 बजे वह कहता है बड़ा काले रंग का द्यो एक आ गया, मुझे डराता था। मैं आपको

याद करता रहा, पन्द्रह-बीस मिनट गुज़र गये, मेरी चारपाई को उसने उलटा दिया, यह किया, वह किया तो फिर आप आये। वह कहता है, मैंने उस भूत को मारा और निकाल दिया! लाल सिंह कहता है मैंने आपको पूछा, आपने देर क्यों लगाई? मैंने कहा, बेवकूफ़! तू मुझे होशियारपुर समझता था, होशियारपुर से आने का मुझे वक़्त तो लगता है। इसलिए हमेशा यक़ीन करो, सत्तगुरु, मालिक हर वक़्त तुम्हारे अंग-संग है! यही गुरु नानक साहिब कहते हैं :—

नानक! सदा रहे हरनाले।

मैं तो वहाँ गया नहीं, मुझे तो पता नहीं! कई ऐसे आदमी मैंने देखे, एक दो मुझे मिले जो कहते हैं, बाबा! मैं दरिया में डूब रहा था, तुम को याद किया, तुमने छाल मारी मुझे पकड़ के किनारे ले गये और मेरे तो बाप को पता नहीं। मैं आपको बताता हूँ ख्याल की ताक़त क्या है, विश्वास में कितनी ताक़त है! देवास में एक लड़का मेरे सामने आया, मैं तो उसको नहीं जानता था, उसके बाप का नाम मुन्शी-

राम था, मेरा नाम सुना हुआ था, मुझे गुरु मानते थे। वह कहता है बाबा जी! मैं पर्चा देने गया साईन्स का, आता नहीं था, मैं रो पड़ा। आप आ गये, आप ने कहा मैं मेज़ के नीचे बैठ जाता हूँ और आप ने पर्चा मुझ को *Dictate* करा दिया, 100 में से 93 नं० आये। अब मैं सोचता हूँ फ़कीर चन्द! मैं ब्राह्मणी का जाया हूँ, आत्मा से पूछता हूँ तू गया था? मैं नहीं गया, मुझे नहीं पता, यह क्या खेल है? मैं इस नतीज़े पर आया कि ऐ इन्सान! जो कुछ है तेरा अपना विश्वास है, तेरी अपनी श्रद्धा है, तेरा अपना यक़ीन है, तेरी अपनी नीयत है, मेरी समझ में यह बात आई है! दूसरे महात्माओं ने इस बात का पर्दा रखा और पर्दे में भलाई भी थी इस को भी मैं मानता हूँ मगर मैं डर गया। मैं डर गया हूँ! क्योंकि महात्माओं की ज़िन्दगियाँ मैंने देखीं, मेरा कल को क्या हाल हो, कैसे मरूंगा मुझे क्या पता, मैं नहीं जानता इस वास्ते मेरी तालीम में यह नुक़्स है कि मेरी साफ़ब्यानी से लोगों का अज्ञान का विश्वास जाता है, इस को मैं महसूस करता हूँ मगर मुझे पहले

अपनी जान प्यारी है, तुम प्यारे नहीं हो। मुझे अपनी जान प्यारी है तुम प्यारे नहीं ! मैं आज पर्दा रखता सेठ साहिब ! मैं आज लाखों, करोड़ों का मालिक होता, सिर पर चँवर ढुरते होते जिस तरह मेरा रूप लोगों की मदद करता है, हैरान होता हूँ, अक्ल नहीं मेरी काम करती। तो फिर मैं क्या कहना चाहता हूँ तुमको ? विश्वास रखो, गुरु न जन्मता है, न मरता है, वह अजर, अमर और अविनाशी है, वह तुम्हारे अन्तर रहता है। बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि वह तुमको सत्संग कराके समझा दे कि गुरु तेरे अन्तर है। मुझे यह समझ नहीं आती थी कि गुरु मेरे अन्तर है, मैं समझता था लाहौर में है या राधास्वामीधाम में है। वो लिखा करते थे मगर मेरी समझ में नहीं आता था ! यह काम जो मुझ को दिया उन्होंने, यह समझाने के लिए दिया है कि ऐ बेवकूफ़ फ़कीर चन्द ! तू जिस गुरु की तलाश करता फिरता है वह तो हर वक़्त तेरे पास है ! तुम लोगों के चरणों की मिट्टी सिर पर रखने से मुझे यह यकीन हो गया कि गुरु मेरे पास है।

जैसे मेरा रूप तुम लोगों के अन्दर मदद करता है, मैं नहीं होता तो यक़ीन हो गया नां कि गुरु जो है यह हर शख़्स के अन्दर है, नहीं समझ में आती है! *I want to Liberate you people.* मैं तुम्हारी आँखों में मिट्टियाँ डाल कर अपना उल्लू नहीं सीधा करना चाहता, तुम को यक़ीन कराता हूँ कि वह गुरु, सत्तगुरु तुम्हारे पास है, जिस तरह से मुझे यक़ीन आया मैं वो बात आपको बताता हूँ। यह यक़ीन मुझे आना चाहिए कि नहीं चाहिए? जब मैं नहीं जाता! तो मालूम हुआ ना कि गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है। बस! बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि तुमको :—

घर में घर दिखलाय दे, सो सत्तगुरु पुरुष सुजान।

जो तुम को तुम्हारे अन्दर में ही असलीयत बतला दे उसका नाम बाहर का क़ामिल गुरु है। दाता का मेरे नाम शब्द है।—

फ़कीरा! गुरु तो तेरे पास।

त्याग भरम विकार मन का, छोड़ जग की आस।
आस कर एक गुरु चरन की, सबसे होय निरास।।
तेरे मन में तेरे तन में, तेरे स्वासों स्वाँस।

गुरु बसें दिन रात प्यारे, धर चरन विश्वास ।।
गुरु नहीं तीरथ व्रत में, गुरु ना योग अभ्यास ।
ढूंढ़ अपने हृदय में नित, वहाँ उनका वास ।।

अब तुम देखो ! मैंने हृदय में ढूँढ़ा, उसकी तलाश नहीं समझ में आती थी ! ऐ सत्संगियो ! मुझे गुरु मानने वालो !! (दिल भर आया) तुम्हारे चरणों की बदौलत मुझे यक़ीन हुआ कि गुरु मेरे पास है । इसलिए इस उमर में, दाता दयाल तो हैं नहीं, मैं उन सत्संगियों की मन्दिर में सेवा करता हूँ जिनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ ! उनको मुसीबत आई, मैंने कहा आ जाओ मेरे पास, उनकी सेवा करता हूँ। आप लोगों के घरों से कुत्ता बन के टुकड़ा ले जाता हूँ उनको खिलाता हूँ। यह बात बिलकुल मैं अपने हृदय की सच्ची कहता हूँ। मुझे पता नहीं लगता था जब तुम लोगों ने मुझे कहा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट हुआ, मैं तो था नहीं ! तो मैं अपने अन्दर ढूँढ़ने के लिए मजबूर हुआ कि जिस क़दर मेरे मन के अन्दर ख़्यालात उठते थे, विचार उठते थे, वह क्या निकले ? मेरे अपने मन के

ही कल्पित थे नां ! मैं तुम लोगों को आज़ाद कर जाना चाहता हूँ, ऊँचा बोलता हूँ मेरे वश की बात नहीं है। यक़ीन होना चाहिए मुझे कि नहीं ? जब तुम्हारे अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ, मैं तो था नहीं, तो मुझे यक़ीन हो गया कि आपने मेरे रूप को बनाया। तो मेरे अन्दर भी जितने ख़्यालात पैदा होते थे या होते हैं, उनको मैं समझने के लिए मजबूर हूँ नां कि वह मेरे अपने मन के कल्पित हैं, हैं या कि नहीं ? यक़ीन होना चाहिए ! तो फिर मैं आगे ढूँढ़ता हूँ। मन को छोड़ के आगे प्रकाश है और शब्द है। नहीं समझ में आती है ! अगर मैं यह समझूं कि प्रकाश गुरु है (फ़र्ज़ करो) तो उसको मेरे पास हमेशा रहना चाहिए। फिर गुरु कौन हुआ ? आनन्दराव। मेरी बात को कौन-२ समझेगा ! मेरा जो अपना आप है, जो असल में फ़कीर चन्द है, जो असल में तत्त्व है वही मेरा आत्मा है, वही मेरा गुरु है, वही मेरा सत्तगुरु है मगर यह इतनी ऊँची बात है, तुम गृहस्थी यहाँ तक नहीं पहुँच सकते। तुम दुनिया के पीछे पड़े हुए हो, दुनिया की आशाएँ मांगते हो, तुम को

दुनिया चाहिए यह दुनिया तो चाररोज़ा है, कब तक रहेगी ! तो मुझे तो यक़ीन तुम लोगों से हुआ ! इसलिए चूँकि मुझे इस बात का यक़ीन आप लोगों से हुआ इस वास्ते इस उमर में मैं आप लोगों को अपना सच्चा सत्तगुरु समझ के नमस्कार करता हूँ । बस ! इतनी ही बात है, मगर जिन को दुनिया चाहिए उनको यह मुश्किल बड़ी है । दाता कहते हैं नां :—

त्याग भरम विकार मन का, छोड़ जग की आस ।

वह जग क्या है ? वह जगत् मेरे मन के ख़्यालात हैं, मेरे मन की वासनाएँ हैं, मेरे मन की आशाएँ हैं, मेरे मन के विचार हैं वह जगत् है ! इस जगत् को कौन छोड़ेगा, यह तो बना हुआ भगवान् का जगत् है । मेरा जगत्, तुम्हारा जगत्, हमारे अपने मन के हैं । तो जब इन्सान इस मंज़िल पर जाता है वह इस मन से परे चला जाता है । यही सन्तमत की ऊँची तालीम है । आप समझ गये मेरी बात को :—

कर्म में माया है व्यापे, धर्म यम की फांस ।

मन में अनबन देखी बन में, भ्रम था संन्यास ।।

रामचन्द ! आँख खोल !! सत्संग करा रहा हूँ । ये जितने मन के चक्कर हैं ये सब इसी के चक्कर में हम आये हुए हैं, यह सन्तमत की तालीम है । मैंने जो आज इस वक़्त तक बोला वह सन्तमत की तालीम नहीं बोली । मैं, तुम गृहस्थी हो, तुमको गृहस्थ का जीवन बताया है, सभी को सन्तमत की तालीम की ज़रूरत नहीं है, मेरे पास जितने आदमी आते हैं, माफ़ करना । यह लड़की की शादी है, यह बेटा है, यह भाई है, मकान है, कारोबार है, दुनिया तो इस चक्कर में फँसी हुई है, उनके चक्कर को ठीक करने के लिए मैंने जो कुछ पहले कहा वह यह है कि अपने संकल्प को ठीक रखो । देखो ! तुम दुनियादार हो, मैं भी दुनियादार हूँ, पैसे के विना मेरा भी गुज़ारा नहीं और न दाता दयाल का गुज़ारा था, माफ़ करना मैं तो बड़ा सच्चा आदमी हूँ, यह संसार ही ऐसा है । इसमें अगर तुम जो कुछ भी चाहते हो वह दो, प्रेम चाहते हो प्रेम दो, इज़्ज़त चाहते हो इज़्ज़त दो, धन चाहते हो धन दो, गाली चाहते हो

गाली दो, जो कुछ तुम दोगे तुमको वह मिलेगा मगर देते वक़्त हमेशा यह ख़्याल रखो कि जिसको दो उसके दिल से तुम्हारे वास्ते शुभ भावना निकले। इन गेरुए कपड़े वाले साधुओं को तुम दोगे, ये तो अपना हक़ समझते हैं, इनके अन्तर से शुभ भावना तुमको नहीं मिलेगी, माफ़ करना मेरी बात, मैं बड़ा साफ़ आदमी हूँ। नहीं समझ में आती है! ये तो अपना हक़ समझते हैं तुम लोगों से लेने का, शुभ भावना वे कहाँ से देंगे। किसी ग़रीब दु:खिये की मदद किया करो, गृहस्थी की मदद किया करो। ये मेरी आजमाई हुई बातें हैं। मेरे पास एक वैद्यराज आया। जालन्धर के गाँव में काम करता था। मेरे पास आया, बाबा जी! बारह साल हो गये शादी को, मेरे औलाद नहीं है। मैंने कहा क्या काम करते हो? डाक्टर हूँ। कहाँ करते हो? गाँव में। मैंने कहा एक काम किया करो। क्या? मैंने कहा अस्पताल के वक़्त के बाद अगर कोई तेरे पास दु:खी आवे उसके घर जाके उसका इलाज मुफ़्त किया करो, तुम्हारे लड़का हो जायेगा।

डेढ़ साल के बाद वह मेरे पास लड़के को लेके आया। मैं तो भूल गया, मैंने उसका नाम फ़कीर चन्द ही रखा। उसको लड़का किसने दिया? मैंने दिया? जो आदमी अस्पताल के वक़्त के बाद आयेगा, वह बेचारा दु:खी होगा ना! और फिर वह उसके घर जाके उसका मुफ़्त इलाज करता था, उसकी शुभ भावना लेता था। दूसरा उदाहरण यह बैठा हुआ है मूलचन्द, बड़े सेठ! क्यों? रेहड़ी लगाया करते थे। परमार्थ का वहम था, मेरे पीछे फिरा करते थे। मैंने कहा, तुम भई! एक छोटी सी दुकान ले लो, काम करो, काम चल जायेगा। इन्होंने ले ली, काम इनका चल गया। आज दस साल हुए मेरे पास आया, कहने लगा, बाबा जी! हम आपकी सेवा करना चाहते हैं। मैंने कहा, भई! सेवा की तो मुझे भी ज़रूरत है क्योंकि लड़की है मेरी, नोम उन्मत्त है, मुझे उसके लिए ज़रूरत है परन्तु एक शर्त पर। कहने लगा, क्या? तुम मुझसे अपनी ज़िन्दगी में न दुनिया, न परमार्थ मांगोगे नहीं। उन्होंने कहा मुझे मंजूर है। अब इसका 250 रुपये मासिक मुझे मन्दिर

में आता है, पचास मन्दिर के लिए और 200/- मेरे घर के लिए। लड़का पहले 200/- भेजता था अब 250/- भेजता है। पौने छः सौ, सवा पाँच सौ रुपया मेरे घर का खर्च है। 200/- इनके आते हैं, 250/- लड़का देता है, 450/-, चालीस दुर्गादास देता है, अगर इनका रुपया मेरे पास न आये (बाकी तो मैं किसी से लेता नहीं) मेरे घर का खर्च नहीं चल सकता। गोपालदास के तीन बच्चे हैं एक उसकी बीवी वहाँ रहते हैं, सारा खर्च मेरे सिर पर है। अब अगर मैं नां भी चाहूँ तो जब इनका रुपया आता है, मेरे अन्दर से शुभ भावना निकलेगी या नहीं निकलेगी ? मैं मज़बूर हूँ शुभ भावना देने के लिए। तुम समझते हो मेरी बात को! इस वास्ते ऐ सेठ साहिबान! गृहस्थियों, दुःखियों की मदद किया करो। उनकी शुभ भावनाएँ स्वाभाविक निकलेंगी! नहीं समझ में आती है? मेरे को दस हज़ार रुपया देके आप एक सराय बनवा दोगे उसका इतना फ़ायदा नहीं है जितना किसी दुःखिये की मदद करना, उसके दिल से ख़ुद-बा-ख़ुद शुभ भावनाएँ निकलेंगी! एक शख़्स के पेट में दर्द है,

चिल्ला रहा है, उसके दिल से दुआ निकलेगी कि नहीं निकलेगी, मुझे बोलो ! रामचन्द सुनता है !! हम मन्दिर में क्या करते हैं ? किसी की टाँग नहीं है, किसी का कुछ नहीं है हम उनकी सेवा करते हैं, उनके भाग्य का हमें मिल जाता है और उनकी दुआएँ हमारे काम करती है । जितना मैं साफ़व्यानी करता हूँ, मुझे कौन देगा ! मगर फिर भी काम चलता है । इसलिए ऐ माताओ ! तीन-तीन सौ रुपये की साड़ियाँ मत पहना करो, सौ रुपये की पहन ली । जो दो सौ बचाती हो, गृहस्थी हैं, कितने-कितने दु:खी हैं । हम गृहस्थी हैं, इस वास्ते इन साधुओं, जो मुष्टंडे हैं, भगवें कपड़े पहन के हमको डराते हैं, एक खाते हैं और एक हमको घूरते हैं, डराते हैं ! बात मैं बिलकुल सच्ची कह रहा हूँ, *Help the poor*, दु:खी आदमी की मदद करो । कोई एक लड़का है वह लायक़ है, मां-वाप नहीं पढ़ा सकते, *Help him*, मैंने किया है । एक घर था, नौ दस बच्चे उनके घर में, बाप जो था 80 रुपये मासिक वेतन लेता था । एक लड़की ने मुश्किल से बी. ए.

हैं, एक रुपया रोज़ निकालना है, अब मेरे भाव को आपने समझा नां, मतलब मेरा सुबह उठे, रोज़ भजन किया करो, रोज़, आधा-आधा घण्टा करो, पन्द्रह मिनट करो, बीस मिनट करो, जो रोज़-रोज़ का तुम्हारा साधन है, जिस तरह से रोज़-२ तुम बदपरहेज़ी करोगे किसी दिन पेट में गड़बड़झाला हो जायेगी, होगी कि नहीं होगी मन में रोज़ बदहज़मी से ? अच्छा रोज़-२ तुम व्यायाम करते हो तुम्हारी सेहत अच्छी हो जायेगी । इसी तरह से दान रोज़ यिया करो, वह तुम्हारे मन को उदार करेगा, खिलायेगा, खुला दिल हो जाता है । यह नहीं ! कि तुम बीस हज़ार इकट्ठा लो बल्कि तुम्हारे मन में रोज़ दान देने का संकल्प हो । और याद रखो तुम गृहस्थी हो, जितनी आमदनी है उससे ज़्यादा कभी खर्च मत किया करो, यह बताये देता हूँ तुमको । सौ मिलता है, नहीं बचा सकते तो कम से कम आठ आने बचाओ महीने के । लोकलाज में आकर के हम गृहस्थी बेवकूफ़ बन गये ! अपनी आमदनी से जो ज़्यादा खर्च करता है वह दुःखी होता है, मैं आपको गृहस्थ की *Practical life* बता रहा हूँ । शादी-विवाह तुम्हारे होते हैं जहाँ तक

हो सके ख़र्च को कम करो, ज़रूरत के अतिरिक्त, बेफ़ायदा खर्च मत करो। हमारे दुःखों का कारण तो यह है, राम नाम तो रहा दूर महाराज !, यह तो सैकड़ों में से कोई एक, दो, चार, दस निकलते हैं जिनको परमार्थ को ज़रूरत है, मैं तुमको गृहस्थ की बात बताता हूँ।

Cherity begins at home, सब से पहले अपने परिवार को पालो। देखो ! कोई महात्मा यह कहता है ? कोई नहीं न कहता ! मैं कहता हूं तुमको, ताकि तुम्हारा जीवन सुख से गुज़र जाये। ऐसा किया करो, और सुबह शाम बिलानाग़ा 15 मिनट, तुम नहीं राधास्वामी मत के ऊपर लोग चलते, न चलो, कम से कम सुबह उठके और शाम को लेटते हो, अपने उस मालिक को पाँच मिनट के लिए, दस मिनट के लिए, सच्चे दिल से उससे प्यार किया करो। सुबह उठते हो, उठते ही, हम लोग गुरुपरायण हैं हम गुरु को याद करते हैं, तुम रामपरायण हो, राम को याद करो, सच्चे दिल से पुकार करो। शाम को सोते हो, सोचो, सारा दिन तुमने क्या कुछ किया, किसी के

साथ ज़ुल्म, क्या किया, क्या किया, क्या किया, इसको अपने दिमाग़ में रखो, तुम्हारी ज़िन्दगी स्वर्ग हो जायेगी परन्तु रोज़ किया करो, *daily routine* तुम्हारी बन जायेगी।

मैं आज आपको इस सत्संग में ज़िन्दगी गुज़ारने के बिलकुल आसान रास्ते बता रहा हूँ। जहाँ तक हो सके शान्ति रखो। अगर किसी वज़ह से भाई-२ में नहीं बनती तो बेहतर है अलहदा हो जाओ, *Cold war* मत रखो। *cold war* जानते हो नां ! हर वक़्त दिल के अन्दर बुग्ज़, हसद, क़ीना रखना और बाहर से, आओ भाई जी ! आओ जी, बैठ जाओ !, यह मत रखो, *cold war* का नतीजा ख़राब है। तुम छः महीने अमल करके देखो तुम महसूस करोगे कि आप बहिश्त (स्वर्ग) में हैं।

बच्चों की जो *Nature* (प्रकृति) है उनकी, उनके मुताबिक़ उनको तालीम दो। लड़के का *Trend* तो है *Business* की तरफ़ बाप उसको अपनी मर्ज़ी से, ज़बर्दस्ती नौकरी कराना चाहता है, वह इधर उधर में फँस जायेगा, समझ गये मेरी बात को !

आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया, शाम को इससे आगे कहूंगा, चार सत्संगों में अपनी ड्यूटी पूरी कर जाऊंगा, आज तो मैंने आपको क,ख,ग,घ, पढ़ाई है कि अपनी ज़िन्दगी को कैसे बितायें। चूँकि मन चंचल है इस वास्ते इसको नाम और सुमिरन का ध्यान दो, चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते मन को उधर लगाया करो। तो मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर चला, लफ़्ज़ मेरे बड़े मामूली हैं, सादा हैं मगर अमल करोगे तो बहुत फ़ायदा होगा।

सत्संगियों की प्रबल इच्छा अनुसार आरती की गई और यह शब्द गाया गया :—

साज मंगल साज आये, जगत गुरु दातार,
भक्त काज समाज साजी, धन्य पतित उधार।
शब्द नाव चढ़ाये जन को, किया भव जल पार।
दीन हीन अधीन की सुध, लीन कृपा धार॥
भक्ति भाव की रीति निर्मल; जाने क्या संसार।
आप सत्तगुरु ने सिखाई, धार सन्त अवतार॥
नाथ बिनती सुनो मेरी, तुम हो परम दयार।
जो न पकड़ो बाँह को तुम, बूढ़ूँ काली धार॥

सर्व समरथ साईयाँ, दु:ख त्रिपत मेटनहार।
राधास्वामी कृपा सागर, तुम मेरे रखवार।।

मैं सच्चाई पसन्द तबीयत रखता हूँ। लोग मेरे बारे में बहुत कुछ कहते हैं, बहुत कुछ कहते हैं !, मैं अपनी *Position* साफ़ कर जाना चाहता हूँ कि मैं कुछ नहीं करता। फिर मैं सोचता हूँ क्या मुझसे कुछ किसी को मिल सकता है ? हाँ ! कैसे मिलता है ? पतंजलि के योग शास्त्र में यह लिखा हुआ है। मैं तो संस्कृत नहीं जानता, किसी ने बताया था मुझे, मैंने 'इन्सान बनो' मैं एक *article* निकाला, उसमें मैंने कहा, भई ! तुम मेरा ध्यान करके देखो तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होनी चाहिए, ऐसा मैंने लिख दिया। वह जब छप के रसाला आया तो मैंने अपने आप को बड़ा *Curse* किया, मैंने कहा फ़कीर चन्द ! लोग क्या कहेंगे कि बुड्ढा अहंकारी हो गया, दु:खी था ! अलीगढ़ गया, वहाँ एक वकील है, उसका नाम मैं भूल गया, वह संस्कृत के वेदों का पाठ करने वाला है, मैं जानता हूँ। उसको मैंने बोला, दोस्त ! मैंने यह ग़लती खाई है। वह उस वक़्त तो चला गया, शाम को वह अपनी

पत्नी और अपने बच्चों को ले के मेरे पास आया, दस रुपये, मिठाई, फल, फूल मेरे आगे रखे और उसने मुझे बताया कि पतंजलि के योग शास्त्र में लिखा हुआ है कि उन्नति या शान्ति या निर्वाण लिए यह करो, यह करो, यह करो। अगर किसी से कुछ साधन नहीं होता तो किसी वीतराग पुरुष को अपनी खोपड़ी में रखो, तुम्हारे सब काम हो जायेंगे। बीतराग पुरुष वह है जिसको किसी प्रकार की *attachment* न हो, अपने स्वरूप में रहता हो, उसको वीतराग कहते हैं। मुझसे वीतराग बना तो गया नहीं, मैं कोशिश करता हूँ, अभी दो प्रतिशत, चार प्रतिशत मुझ में कमी है, मैं सच्ची बात कहता हूँ। अगर किसी को मेरे ध्यान से कुछ मिलता है तो इसके मायने यह नहीं है कि मैं देता हूँ, तुम समझते हो मेरी बात को कि नहीं !, यह प्रकृति की gift है। सुन्दर औरत है, उसको देख दूसरे विचलित हो जाते हैं। अगर वह औरत यह कहे कि मैं दूसरों को विचलित करती हूँ, वह मूर्ख है, कल को उसका यौवन चला जाये कहाँ है ! अच्छा ! अगर तुम्हारा विश्वास कहीं नहीं

बैठता, कोई तुमको वीतराग पुरुष नहीं मिलता, फिर क्या करो ? जिस रूप को तुमने माना है उसको वीतराग समझ लो, दीवानो ! तुमको बिलकुल साफ़ और सच्चा रास्ता बताये देता हूँ। जिस रूप में तुम मानते हो आनन्दराव या और या कोई न कोई, वह जो रूप तुम्हारे अन्दर है उसको तुम वीतराग मान लो ! नहीं समझ में आती है ! तुम्हारा जैसा भाव है तुमको वह फल मिलेगा। जिस तरह एक औरत है एक बच्चा उसको मां मानता है, वह जब उसका ध्यान करेगा उसके भाव और होंगे। नहीं समझ में आती है ! दूसरा उसको बहिन मानता है, तीसरा उसको यार मानता है, ऐसे ही यह जो कुछ भी है सब तुम्हारे अपने ही विश्वास और श्रद्धा का फल है। मैंने तुमको कोई बात पर्दे में रखी नहीं ! इस वास्ते कहा जाता है :—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
तुम तो फ़कीर चन्द को गुरु समझते हो दीवानो !

वह जो रूप तुमने बनाया है उसको तुम पूर्ण मान लो :—

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

तुम्हारा काम बन जायेगा, कहीं टक्कराँ मारने की जरूरत नहीं है । एक जगह विश्वास रखो, उस रूप को यह मान लो कि वह पूर्ण है, वह अगर पूर्ण नहीं भी है तुम्हारा काम बन जायेगा ! वस, एक यह मैं कहे देता हूँ । वह अगर पूर्ण नहीं भी है ! नहीं समझ में आतो है, तुम ले जाओगे !! बेड़ा पार है तुम्हारा !!! मैंने कोई बात तुमको पर्दे में नहीं रखी, तुमको सच्ची बात बता दी, जो कुछ तुमको मिलना है, गुरु नानक साहिब की बाणी है :—

मन्ने की गति कहि न जाई ।

सब तुम्हारा ही विश्वास है । इस वास्ते दृढ़ विश्वास रखो ! गुरु नानक साहिब की वाणी है :—

थिर कर रक्खो साजन प्यारे, सत्तगुरु तेरे काज सँवारे ।

थिर मायने क्या हैं ? एक जगह विश्वास रख लो । आज राम को पूजते हो, कल दूसरे को, धोबी का कुता घर का न घाट का ! बस, मेरी समझ में यह आया । अब सब को राधास्वामी ! बाकी सत्संग शाम को ।

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो :

राधास्वामी !

पिछले दो महीने से मैं दौरे पर था, इसलिए आपके भेजे हुए पत्रों का उत्तर नहीं दे सका। आपको मेरी इस कोताही से जो तकलीफ़ हुई उसके लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ। यह दौरा मेरे लिए बहुत ज़रूरी इसलिए था, क्योंकि मैं जब से स्थायी रूप से होशियारपुर आया हूँ वसन्त के दौरे पर नहीं गया था। वसन्त के मौक़े पर परम दयाल जी महाराज हनमकुण्डा में सन्त सम्मेलन पर हमेशा सत्संग दिया करते थे और हज़ूर आनन्दराव जी के साथ हैदराबाद, सिकन्दराबाद, करीम नगर आदि आन्ध्र प्रदेश के केन्द्रों का दौरा करके हज़ारों सत्संगियों को अपने सत्संग का लाभ दिया करते थे। मैं भी अपने मालिके कुल परम गुरु परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज की आज्ञा का पालन करने के लिए उन्हीं के नक्शे क़दम पर चलते हुए आन्ध्र प्रदेश के दौरे पर गया। इस दौरे पर जा कर मैं निहाल हो गया।

हनमकुण्डा में दाता दयाल जी महाराज की वही मूर्ति है, जो मानवता मन्दिर होशियारपुर में भी मौजूद है। वहाँ का मन्दिर बहुत साफ़-सुथरा और सुन्दर है, वहाँ पर दाता दयाल जी महाराज की सुबह और शाम दोनों समय पर बड़ी श्रद्धा और प्रेम से आरती उतारी जाती है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि आन्ध्र प्रदेश और ख़ासकर हनमकुण्डा तथा हैदराबाद के सत्संगियों की श्रद्धा अगाध है और उनमें सेवाभाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। हनमकुण्डा में बच्चों का स्कूल बहुत ही साफ़-सुथरा और सुन्दर है और उसे बहुत ही अच्छे ढंग से चलाया जा रहा है।

प्रत्येक केन्द्र पर सत्संगियों ने मस्त होकर सत्संगों को सुना और यह महसूस किया कि परम दयाल जी महाराज ने मुझे यह उत्तरदायित्व दे कर कृतार्थ किया है। मुझे तो सत्संग देने के समय और उसके बाद कुछ पता नहीं चलता था कि मैंने क्या कहा। मैं यह समझता हूँ कि परमतत्त्व के अवतार परम दयाल जी महाराज क़दम-क़दम पर मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। हैदराबाद में जो आख़िरी तीन सत्संग

हुए उनका सभी पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। चिन्तल बस्ती के प्रेमियों ने परम दयाल जी पर लिखे हुए दाता दयाल जी के मधुर भजनों की अमृतवर्षा की। चिन्तल बस्ती के गाने वालों का समूह हर साल वैसाखी पर होशियारपुर आया करता है। मुझे उनके सामूहिक गान से विशेष आनन्द मिलता है। जब मैंने उनकी बस्ती के मन्दिर में जाकर उनकी श्रद्धा और अनुपम प्रेम का अनुभव सुना तो मुझे खुशी के आँसू आ गये और मैंने यह सोचा कि चिन्तल बस्ती का नाम चैतन्य बस्ती होना चाहिए। हैदराबाद का आखिरी सत्संग श्री कमलेश्वर राव द्वारा संचालित 28 जनवरी की प्रातः को नये केन्द्र पर हुआ। इसमें सत्संगियों की संख्या बहुत अधिक थी। मेरा यह सत्संग लगातार ढाई घण्टे चला। हजूर आनन्दराव जी महाराज ने अन्त में कहा कि यह सत्संग ज्यों का त्यों सभी सत्संगियों के लाभ के लिए मानव मन्दिर में छपना चाहिए!

इसी प्रकार से बम्बई, इटारसी और कटनी में भी सत्संग बहुत ही सफल रहे। शिवरात्रि से एक दिन पहले

हम गोपीगंज में राधास्वामीधाम पहुँचे और वहाँ पर दो दिन तक सत्संग हुआ। उसके बाद मगराहा, खानपुर, बनारस, आज़मगढ़, मुरादाबाद, विलारी होते हुए 19 फरवरी को हम होशियारपुर वापिस पहुँच गये।

इस मासिक सन्देश में वसन्त के दोरे के बारे में इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि परम दयाल जी महाराज ने 1981 की वैसाखी पर मुझे बुलाने के लिए लिए जो पत्र लिखा था, उसमें उन्होंने दो बातों पर ख़ास ज़ोर दिया था। पहला उन्होंने यह कहा था कि यदि मैं वैसाखी से पहले जनवरी में भारत आ जाऊँ तो वह मुझे वसन्त के दौरे पर अपने साथ आन्ध्र प्रदेश ले जायेंगे ताकि वह मुझे वहाँ के सत्संगियों से परिचित करा दें। उन्होंने इसी सिलसिले में एक पत्र में भाग्य को यह भी लिखा था, "तुम दोनों मिल-कर परमार्थ का काम करो।" उनकी इस इच्छा को मैं उस समय पूरी नहीं कर सका, क्योंकि मैं क्लीव-लैण्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ा रहा था और मुझे वहाँ से छुट्टी नहीं मिलती थी। किन्तु वसन्त के इस दौरे से मुझे इन दोनों आज्ञाओं का पालन करने का सुनहरा मौक़ा मिला। वसन्त के दौरे पर मुझे जो आनन्द

आया उसका वर्णन मैं शब्दों में कर ही नहीं सकता। काश ! मैं पिताजी के चोला छोड़ने से पहले एक बार उनके साथ यहाँ आया होता। दूसरा मौक़ा पूरा करने का मौका भाग्य ने दिया। भाग्य की बहुत बड़ी इच्छा थी कि वह हैदराबाद, सिकन्दराबाद तथा दाता दयाल जी की परम प्यारी नगरी हनमकुण्डा के दर्शन करें। परन्तु वह इस बार ऐसा नहीं कर सकीं, क्योंकि अमेरिका से हमारा बड़ा लड़का डाक्टर अरुण इन्हीं दिनों देहली आया हुआ था और महाराज श्री की अनुपस्थिति में ही अरुण की सगाई देहली में ही कर दी गई। उसके फ़ौरन बाद अरुण अमेरिका वापिस लौट गया और भाग्य हैदराबाद के दौरे पर नही जा सकीं। 26 जनवरी को देहली से चल कर बम्बई में हमारे दौरे पर शामिल हो गईं। 1980 में भाग्य ने परम दयाल जी महाराज को अपना पूर्ण गुरु, पिता, परमेश्वर तथा मालिके कुल स्वीकार करते हुए उनसे आशीर्वाद लिया था और यह प्रतिज्ञा की थी कि वह सदा एक आम सत्संगी की हैसियत से महाराज श्री मानव दयाल जी की तथा मन्दिर की सेवा करेंगी और मन्दिर तथा

सत्संगियों के एक पैसे का भी इस्तेमाल अपने तथा अपने परिवार वालों के ऊपर खर्च नहीं करेंगी। हालांकि पिता जी ने उन्हें कहा था कि जब वह मानव दयाल जी के साथ दौरे पर जायें तो मन्दिर का पैसा खर्च करने में कोई हर्ज़ नहीं। परन्तु भाग्य नहीं मानी थीं, उन्होंने कहा था "मैं यात्रा में भी सदैव अपना ख़र्च ख़ुद ही दूंगी।" अरुण और प्रियदर्शी ने भी अपनी माताजी को सत्संगियों तथा मन्दिर का पैसा अपने ऊपर ख़र्च करने के लिए मना कर दिया है। मालिक की कृपा से वह सदैव भविष्य में भी अपने किराये का खर्च ख़ुद ही उठायेंगी। मन्दिर का पैसा सबके लिए एक बहुत ही पवित्र धरोहर है, जिसकी हम सब ने मिलकर रक्षा करनी है। परम परमेश्वर परम दयाल जी का बनाया हुआ मन्दिर तथा पैसा एक अनुपम धरोहर है, उसको अपने स्वार्थ के लिए काम में लाना महान् पाप होगा।

मालिक सदा आप सब को सुखी रखे। यही मेरा दिली अशीर्वाद है। एक बार आप फिर सब को मेरी ओर से राधास्वामी !

आपका फ़कीरमय

मानव

परम सन्त हजूर मानव दयाल डा. ईश्वरचन्द्र शर्मा जी महाराज का मार्च महीने का टूर प्रोग्राम

13-3-1983—प्रस्थान होशियारपुर से कश्मीर मेल द्वारा देहली के लिए।

14-3-1983— ,, देहली से कार द्वारा मथुरा के लिए।

15, 15-3-83—मथुरा।

17-3-1983—प्रस्थान प्रातः मथुरा से कार द्वारा ऊँटासानी के लिए।

17-3-1983— ,, सायं ऊँटासानी से कार द्वारा अलीगढ़ के लिए

18-3-1983— ,, ,, अलीगढ़ से देहली के लिए।

19-3-1983— ,, ,, देहली से होशियारपुर के लिए।

1. सत्संगियों को यह शुभ सूचना दी जा रही है कि हर वर्ष की तरह 13-14 अप्रैल 1983 को वैसाखी का उत्सव मानवता मन्दिर में मनाया जा रहा है।
2. फरबरी की मानव मन्दिर पत्रिका में भूल से परम दयाल जी महाराज और हजूर मानव दयाल जी महाराज के ग़लत चित्र छप गये थे, इस के लिए सम्पादक क्षमा चाहता है।

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूँ आस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
20-3-83 को होगा ।

All the Satsangees
Who Want English Section of Manava-Mandir
Also Must Send Request For the Same.
Editor :

Regd. No. 2626574 MARCH 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad-500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)